IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 12, December 2024
Impact Factor: 5.731

व्यावसायिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन

किरण चौधरी[1]
[1] शोधार्थी
विभाग शिक्षा

डॉ. रामप्रताप सैनी[2]
[2] शोध निर्देशक
विभाग शिक्षा

श्री जे.जे.टी, विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रस्तावना

अच्छे समाज के निर्माण व विकास के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्र का शैक्षिक स्तर उच्च हो। शिक्षा के स्तर के आधार पर ही देश की उन्नति होती है। 12वीं कला या ग्रेजुएशन के बाद व्यक्ति अपने भविष्य को संवारने के लिए रूचिपूर्ण मार्ग को अपनाता है तथा उसी के अनुसार महाविद्यालय का चयन करता है। बालकों की इसी रूचि को निखारने तथा भविष्य को उज्ज्वल बनाने का कार्य व्यावसायिक महाविद्यालय करते हैं।

व्यावसायिक महाविद्यालय बालकों को नौकरी के लिए पाठ्यक्रम प्रदान करता है जिनका विशेष अध्ययन कर उस क्षेत्र में कार्य करता है। प्राचीन समय में व्यक्ति जीविका के लिए पारंपरिक कार्यों को करता था। लेकिन वर्तमान युग में तकनीकी व औधोगिकी के कारण व्यक्ति को व्यवसाय प्राप्त करने के लिए बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वर्तमान समय में मशीनों का उपयोग अधिकाधिक होने पर मनुष्य की भूमिका बहुत कम हो गई है। इसलिए व्यक्ति को अपनी जीविका के लिए स्वयं व्यवसाय करना होता है जिसके लिए उसे प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षण के लिए मनुष्य को व्यावसायिक महाविद्यालय में जाना होता है।

सृजनात्मकता मनुष्य के बौद्धिक विकास की उच्चतम उपलब्धि के रूप में मानी जाती है। यह जीवन के किसी भी क्षेत्र, किसी भी क्रिया कलाप में प्रकट हो सकती है। इनका स्तर अलग–अलग हो सकता है। सृजनात्मकता किसी भी एक क्रिया या वस्तु को पहले से अधिक उत्तम, समृद्ध, अधिक उत्पादक एवं उपयोगी बनाती है। जैसा कि हम जानते हैं, औद्योगिकीकरण के कारण मानव जीवन निरन्तर जटिलता की ओर बढ़ रहा है। बढ़ती हुई प्रतियोगिताएं मनुष्य के समक्ष अनेक समस्याएं उत्पन्न करती हैं। इन समस्याओं के समाधान की आवश्यकता अनिवार्यतः अनुभव की जा सकती है क्योंकि जिन परिवर्तनशील जगत में समायोजन की नई आदतें और नवीन चिन्तन अत्यन्त आवश्यक है। भारतीय सन्दर्भ में तो यह और भी आवश्यक है क्योंकि समाज में आज बैलगाड़ी भी है और जेट जहाज भी। दूसरे शब्दों में मंद गति से चलने वाली जीवन शैली और द्रीवगामी पाश्चात्य जीवन शैली की धाराऐं आपस में टकरा रही है। समाज में भूख से तड़पते हुए लोग भी हैं और पाँच–सितारा संस्कृति में पले पढ़े चिर असंतुष्ट धनाढय भी है। इस विषमता से जन्मी विकराल समस्याओं का समाधान घिसी–पिटी सर्वमान्य बौद्धिकता से संभव नहीं है। इसके लिए ऐसी सृजनशीलता की आवश्यकता है जो समस्या का समाधान अद्वितीय एवं मौलिक रीति से कर सके। अतः आज के शिक्षक, अभिभावक एवं समाज का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति को सृजनशीलता से परिचित होना होगा, इसके अर्थ एवं प्रकृति को समझना होगा, उसके पोषण एवं अभिवृद्धि के लिए प्रयत्नशील होना होगा ताकि समस्याओं का समाधान नवीन रीतियों से करके विनाश पर खड़ी मानवता को बचाया जा सके और मानव मात्र में वसुधैव कुटुम्बम की नवीन आवधारणा का सृजन व विकास किया जा सके।

Copyright to IJETIR

www.iciset.in

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 12, December 2024
Impact Factor: 5.731

आज उनको ऐसे वातावरण की, ऐसे गुणों की, ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो उनमें अपने व्यवसाय के प्रति लगाव रखने में सहायता करें। ऐसा होने के बाद ही भावी डॉक्टर रोगी की जान की कीमत समझ सकेंगे न कि पैसे का लालच करेंगे, वकील झूठे मुकद्दमें नहीं लड़ेगें व इन्जीनियर ऐसी इमारतें खड़ी नहीं करेगें जो लोगों की जान के लिए खतरा बन जाती हैं। इसके लिए विद्यार्थियों में सृजनात्मकता जैसे गुणों के विकास की आवश्यकता है। इन्हीं तथ्यों के समाधान को ढूंढने का प्रयास अनुसंधानकर्त्री ने प्रस्तुत अनुसंधान में किया है।

अध्ययन का महत्व :–

इस धरती पर जब से मनुष्य एवं जीव जगत का आगमन हुआ हैं, प्रत्येक प्राणी को अपनी मूल प्रवृत्ति को शान्त करने के लिये कुछ न कुछ करना आवश्यक है। इसी श्रेणी में मनुष्य अपनी भूख मिटाने के लिये कर्म करता है। उससे अपनी भूख मिटाने का प्रयास करता है। इसलिये मनुष्य अतीत काल से ही कर्मशील रहा है और आज भी है, परन्तु पूर्व काल के कर्म एवम् वर्तमान में मनुष्य के कर्म क्षेत्र में परिवर्तन आ गया है।

आधुनिक जगत में ज्ञान, तकनीकी एवं सूचना क्रान्ति के विकास के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं में भारी फेरबदल हुआ है, जिसके चलते आज मानवीय समाज अनेक पर्यावरणीय तथा मनो–सामाजिक समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी जगत भी अछूता नहीं है। प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता व विश्व की अनेक सभ्यताएँ धार्मिक प्रवृति से सम्पृक्त थी, जिसमें धर्म को आधार मानकर शिक्षा दी जाती थी। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन सांस्कृतिक चेतना एवं धार्मिक सहिश्णुता से संचालित होता था। इसके साथ–साथ आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक ढांचे धार्मिक विचारधाराओं से सिंचित थे। जीवन का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति था अतः उस समय अध्यापक की भूमिका ईश्वर के रूप में थी।

आज के आधुनिक युग में सृजनात्मकता एवं तार्किक चिंतन प्रवृत्ति व्यक्ति की प्रमुख प्रवृत्ति है जो उसे प्रतिभा सम्पन्न बनाती है। इसकी सहायता से मनुष्य नवाचारों से अवगत होता है तथा ये नवाचार मनुष्य की तत्कालीन भौतिक सम्पन्नताओं में वृद्धि करते है एवं राष्ट्र विकास की तरफ अग्रसर होता है। अतः यदि हम इन योग्यताओं का निर्धारण विद्यार्थियों के विभिन्न वर्गों के अनुसार कर सके तो विद्यार्थियों की योग्यता का उपयुक्तता के आधार पर चयन कर विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति में लगाया जा सकता है। वर्तमान समय में मानव जीवन में अनके परिर्वतन आ रहे है। प्रत्येक कदम पर छात्र–छात्राओं को नवीन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन परिस्थितियों का सामना छात्र तभी कर पायेंगे, जब उनमें सृजनशीलता, तार्किक योग्यता, एवं उच्च स्तर की मानसिक योग्यता हो।

महाविद्यालयी विद्यार्थियों की आयु ऐसी होती है जिनमें सृजनात्मकता का स्तर अच्छा होता है परन्तु इस वर्ग के विद्यार्थी किशोरवय के होते है जिनके अपने पथ से भ्रमित होने की आशंका ज्यादा रहती है। उसमे भी विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में तो सृजनात्मकता का विशेष महत्व होता है क्योंकि विज्ञान मे नयी–2 चीजों का आविष्कार होता रहता है। उसमे सृजनात्मकता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। विद्यार्थियों को अच्छा वातावरण प्रदान किया जायें जिसमें विद्यार्थियों को सृजनात्मक चितंन के पर्याप्त अवसर प्रदान किये जायें। समय–2 पर ऐसे विज्ञान मेलों व विज्ञान–प्रदर्शनियों का आयोजन विद्यालयों मे किया जायें जिससे विद्यार्थी सृजनात्मक चितंन की ओर उन्मुख हो सके तथा उनकी सृजनात्मकता का विकास उचित तरीके से हो सके।

समस्या कथन :–

''व्यावसायिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन''

IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)

Impact Factor: 5.731

Volume 4, Issue 12, December 2024

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. I.T.I. एवं शिक्षा–संकाय महाविद्यालयों के छात्रों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–

1. I.T.I. एवं शिक्षा–संकाय महाविद्यालयों के छात्रों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन :–

प्रस्तुत शोधकार्य का क्षेत्र, राजस्थान के सीकर जिले के रींगस क्षेत्र को रखा गया है।

इस शोधकार्य में न्यादर्श के रूप में आई.टी.आई. एवं शिक्षा संकाय व्यावसायिक महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श में कुल 200 प्रशिक्षणार्थियों (छात्र 100 + छात्राएँ 100) को सम्मिलित किया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निश्कर्श वैध एवं विष्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

सृजनात्मकता :–

प्रस्तुत षोधकार्य हेतु, प्रषिक्षणार्थियों की सृजनात्मकता को ज्ञात करने के लिए डॉ. बाकर मेहन्दी द्वारा प्रमापित मापनी को आधार माना गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत षोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान ;डद्धए प्रमाणिक विचलन ॑;क्द्ध एवं क्रांतिक अनुपात मान की सार्थकता की गणना की गई है।

समंकों का सारणीयन एवं विष्लेशण :–

प्रस्तुत षोधकार्य में अनुसंधानकर्त्री ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विष्लेशण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

तालिका संख्या – 1

ण्जण्ण् एवं शिक्षा–संकाय महाविद्यालयों के छात्रों की सृजनात्मकता मापनी के प्राप्तांकों के मध्य, मध्यमान अंतर की गणना

छात्र	सं. (N)	मा. (Mean)	मा. वि. (S.D.)	क्रां. अ. (CR.Value)	सा. के स्तर	
					.05	.01
आई.टी.आई.	50	35.29	8.39	0ण्60	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
शिक्षा संकाय	50	33.81	7.69			

(df=N1+N2 -2 = 50+50-2=98)

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 12, December 2024
Impact Factor: 5.731

उपर्युक्त सारणी में ण्ज्ण्ण एवं शिक्षा–संकाय महाविद्यालयों के छात्रों की सृजनात्मकता मापनी के मध्यमानों एवं मान. विच. का प्रदर्शन दिखाया गया। इनके मध्य. क्रमशः 35ण्29 एवं 33ण्81 प्राप्त हुए तथा मा.वि. क्रमशः 8ण्39 एवं 7ण्69 प्राप्त हुए हैं। कां.अ.मा. ;ब्त्ण्टंसनमद्ध 0ण्60 प्राप्त हुआ है। 98;कद्धि स्वतंत्रता के अंश पर 0ण्05 सा. स्तर का मान कां.अनु.मान. की टेबल में 1ण्98 तथा 0ण्01 सा. स्तर का मान 2ण्63 दिया गया है। जांच प्रणाली द्वारा प्राप्त मान दोनों सा. स्तरों पर कम है, अतः यह निर्धारित जीरो प्राक्कल्पना स्वीकार्य की जाती है तथा निष्कर्षान्त ऐसा कहा जा सकता है कि ण्ज्ण्ण एवं शिक्षा–संकाय महाविद्यालयों के छात्रों की सृजनात्मकता मापनी में कोई सार्थक फर्क नहीं है।

आरेख संख्या – 1

I.T.I. एवं शिक्षा–संकाय महाविद्यालयों के छात्रों की सृजनात्मकता मापनी के प्राप्तांकों के मध्य मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात मान का डायग्राम

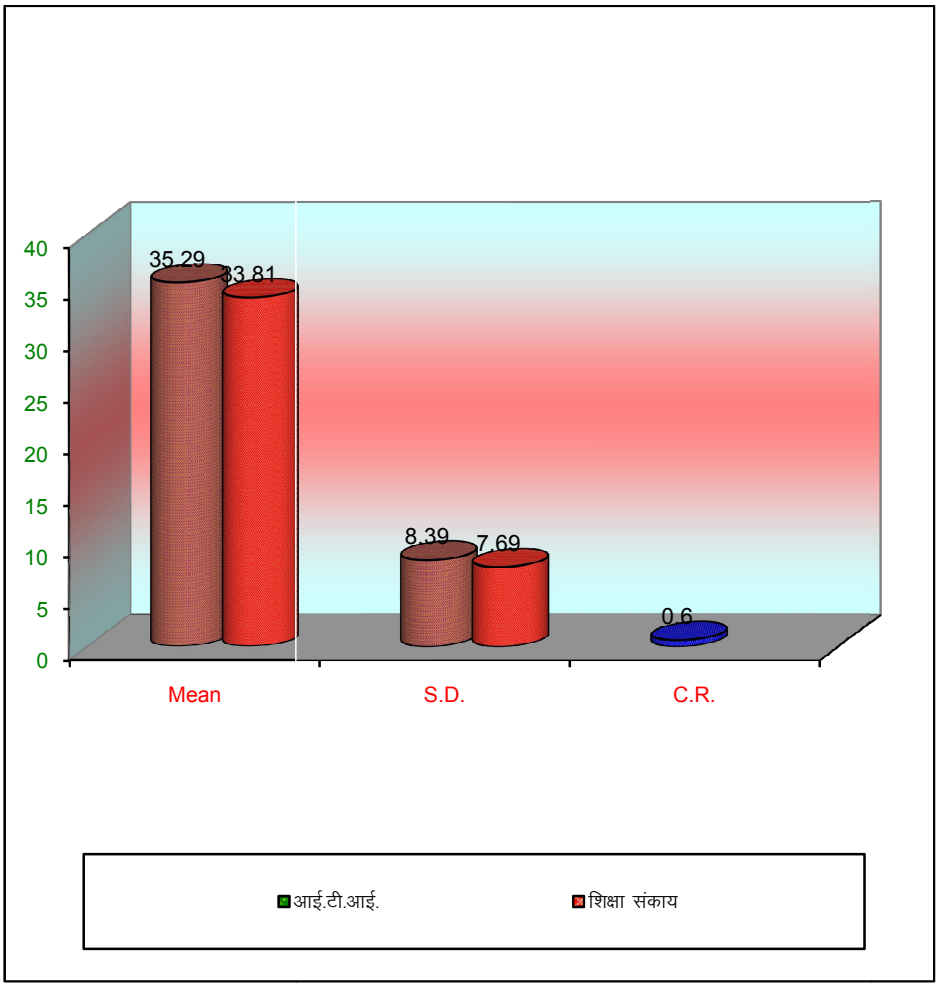

उक्त आरेख में ण्ज्ण्ण एवं शिक्षा–संकाय महाविद्यालयों के छात्रों की सृजनात्मकता मापनी के प्राप्तांको के मध्य मध्यमान दर्शाया गया है जिसके अनुसार ण्ज्ण्ण एवं शिक्षा–संकाय महाविद्यालयों के छात्रों की सृजनात्मकता मापनी के प्राप्तांकों के मध्य, मध्यमान अन्तर की गणना के अनुसार कां. अ. मा. 0ण्60 दर्शाया गया है।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 12, December 2024
Impact Factor: 5.731

निष्कर्ष :–

I.T.I. एवं शिक्षा–संकाय महाविद्यालयों के छात्रों की सृजनात्मकता मापनी में कोई सार्थक फर्क नहीं है, अतः परिकल्पना स्वीकृत मानी गई है।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1. श्रीवास्तव, डी.एन. और वर्मा, प्रीति (2007). बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास. आगराः विनोद पुस्तक मंदिर. पृष्ठ संख्या–459–460
2. श्रीवास्तव, डी.एन. और वर्मा, प्रीति (2004). शिक्षा अनुसंधान में सांख्यिकी विधियाँ. आगराः विनोद पुस्तक मंदिर.
3. अग्रवाल, उमेषचन्द्र. (2004). सर्व शिक्षा अभियान वृहद् लक्ष्य कमजोर प्रयास. नई–दिल्लीः भा.आ.शि., एन.सी.ई. आर.टी., नई–दिल्लीः पृ.सं. 9
4. कपिल, एच के. (1979). अनुसंधान विधियाँ. आगराः द्वितीय संस्करण. हरिप्रसाद भार्गव हाऊस. पृष्ठ संख्या–23
5. कोठारी, सी.आर. (2008). अनुसंधान विधिषास्त्र विधियाँ और तकनीकी. आगराः न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन. पृष्ठ संख्या–2
6. खान, ए.आर. (2005). जीवन कौशल शिक्षा. अजमेरः राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड. पृष्ठ संख्या–14
7. गुप्त, नत्थूलाल (2000). मूल्य परक शिक्षा और समाज. नई दिल्लीः नमन प्रकाशन. पृष्ठ –122
8. गौड, अनिता (2005). बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे. नई दिल्लीः राज पाकेट बुक्स. पृष्ठ संख्या–14